श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 139, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शुक्रवार, 25 दिसम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

भारतीय किसान यूनियन- लोकशक्ति ने नए कृषि कानूनों को सुप्रीम कोर्ट में दी चुनौती

भारतीय किसान यूनियन (लोकशक्ति) ने नए कृषि कानूनों को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। संगठन ने कृषि कानूनों के खिलाफ लंबित मामलों की सुनवाई की मांग की है। नए कृषि कानूनों के खिलाफ विभिन्न किसान संगठन दिल्ली की सीमाओं पर कई दिनों से आंदोलन कर रहे हैं।

नई दिल्ली, पीटीआइ। भारतीय किसान यूनियन (लोकशक्ति) ने नए कृषि कानूनों को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देते हुए इनके खिलाफ लंबित मामलों की सुनवाई की मांग की है। नए कृषि कानूनों के खिलाफ विभिन्न किसान संगठन दिल्ली की सीमाओं पर कई दिनों से आंदोलन कर रहे हैं। बीकेयू (लोकशक्ति) ने सुप्रीम कोर्ट में दायर अपनी याचिका में दावा किया है कि नए कृषि कानून कारपोरेट हितों को बढ़ावा देने वाले हैं। इनमें किसानों के हित की चिंता नहीं की गई है।

वकील एपी सिंह के जरिये दायर याचिका में कहा गया है कि नए कानून असंवैधानिक और किसान विरोधी हैं। ये कानून कृषि उत्पाद बाजार समिति प्रणाली को नष्ट कर देंगे, जिनका उद्देश्य किसानों की उपज को न्यायसंगत मूल्य सुनिश्चत करना है। याचिका में कहा गया है कि मौजूदा स्वरूप में इन कानूनों को लागू किया जाना कृषक समुदाय के लिए खतरनाक होगा, क्योंकि इससे एक समानांतर बाजार व्यवस्था शुरू हो जाएगी, जिसका कोई नियम-कानून नहीं होगा।

याचिका में यह भी कहा गया है कि कृषि कानूनों के जरिए किसानों का शोषण आसान हो जाएगा। याचिका के अनुसार, किसानों में इस बात का डर है कि इन कानूनों से पूरे कृषि बाजार का व्यावसायीकरण हो जाएगा और कारोबारी अपनी इच्छा से कीमतें घटा-बढ़ा सकेंगे। वहीं दूसरी ओर कृषि कानूनों का विरोध कर रहे किसानों को हटाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करने वालों में से एक याचिकाकर्ता 40 से ज्यादा किसान यूनियनों को पक्षकार बनाने की मांग की है।

उल्लेखनीय है कि पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों के किसानों का आंदोलन बृहस्पतिवार को 29वें दिन पहुंच गया। किसान नेता नए कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग पर अड़े हुए हैं। किसान दिल्ली से सटे हरियाणा के सिंघु और टीकरी बॉर्डर के साथ यूपी के नोएडा और गाजीपुर सीमा पर भी लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं। वहीं कांग्रेस ने भी किसानों के मसले पर सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि किसान कृषि-विरोधी कानूनों के खिलाफ आंदोलन कर रहे हैं। इस सत्याग्रह में हम सबको देश के अन्नदाता का साथ देना होगा। वहीं कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा है कि राहुल गांधी को कांग्रेस भी गंभीरता से नहीं लेती तो देश का सवाल ही नहीं उठता। आज जब वे राष्ट्रपति को विरोध व्यक्त करने गए तब कांग्रेस से कोई भी नेता किसानों से हस्ताक्षर करवाने नहीं आया और न किसानों ने हस्ताक्षर किए।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा- मजहब देश, काल और परिस्थिति के हिसाब से बदलते हैं, लेकिन पूर्वज नहीं

अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित काव्य संध्या में सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अटल जी एक कवि थे वह एक साहित्यकार थे और साहित्य से राजनीति में आए थे। कवि हृदय राजनेता के लिए यह उपयुक्त श्रद्धांजलि है।

लखनऊ, जेएनएन। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि मजहब देश, काल और परिस्थिति के हिसाब से बदलते हैं, लेकिन पूर्वज नहीं। भगवान राम वैश्विक नायक हैं। यह बात तब और चरितार्थ होती है, जब इंडोनेशिया के मुस्लिम कलाकार रामलीला के पात्र बनकर मंच पर उतरते हैं। सीएम योगी ने बताया कि इंडोनेशिया की रामलीला के पात्रों को मैंने अयोध्या में देखा, उसके बाद उन्हें लखनऊ में सम्मान के लिए बुलाया। मैं देखकर हैरान था कि सभी पात्र मुस्लिम थे। मैंने उनसे कहा कि आप मुस्लिम होने के बावजूद राम, सीता या हनुमान बने थे। उन्होंने कहा हमारे यहां राम को लोग बड़ी श्रद्धा के साथ सम्मान करते हैं। राम हमारे पूर्वज हैं और इस्लाम हमारा मजहब। मैंने कहा- अगर भारत के अंदर कोई बनता तो फतवा जारी हो गया होता।

इससे पहले सीएम योगी ने भारत रत्न व पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित काव्य संध्या का दीप जलाकर उद्घाटन किया। पं. अटल बिहारी वाजपेयी मेमोरियल फाउंडेशन की ओर से अटल जयंती की पूर्व संध्या पर कन्वेंशन सेंटर में गुरुवार को आयोजित काव्य समारोह में अटल व्यक्तित्व को कवि डॉ. कुमार विश्वास ने विराट काव्यांजलि दी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या की पहचान राम के साथ-साथ दीपोत्सव से भी होनी चाहिए। मंदिर तो अनेक बन सकते हैं पर अयोध्या में राम मंदिर हमारी आस्था का केंद्र बिंदु है। यहां रामलीला करने आए इंडोनेशिया के कलाकारों में अधिकतर मुस्लिम थे। भारत के अंदर वो रामलीला के पात्र बनते तो फतवा जारी हो जाता।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अटल एक कवि थे। एक साहित्यकार थे और साहित्य से राजनीति में आए थे। कवि हृदय राजनेता के लिए यह उपयुक्त श्रद्धांजलि है। वर्ष 1957 में उन्होंने राजनीति में कदम रखा और वर्ष 2006 तक सक्रिय रूप से राजनीति को प्रभावित किया। अटल सबके प्रिय बने रहे। दल से ऊपर उठकर उनके प्रति लोगों में सम्मान का भाव था। सार्वजनिक जीवन में जाने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक नागरिक के लिए अटल का जीवन अनुकरणीय हो सकता है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने सदैव प्रेरणा दी कि राजनीति मूल्यों की होनी चाहिए, आदर्शों की होनी चाहिए। उनकी स्मृतियां हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। अटल की कविताओं में राष्ट्र के प्रति जो भी भाव हैं, वो आज साकार होते दिखते हैं। जिस दिन कश्मीर में धारा 370 समाप्त हुई, अटल की आत्मा को शांति मिली होगी कि उनका संकल्प पूरा हुआ। अपने महापुरुषों के प्रति श्रद्धा का भाव सिर्फ भाषणों से नहीं, व्यावहारिक रूप से होना चाहिए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कहा कि कोरोना काल में हम लापरवाही नहीं कर सकते। हम सतर्क रहते हुए सभी कार्यक्रमों को करेंगे तो कोरोना से भी जीतेंगे और अपने महापुरुषों को श्रद्धांजलि भी दे पाएंगे। उन्होंने कहा कि लोहिया के नाम पर लोग राजनीति जरूर करते हैं, लेकिन परिवारवाद को बढ़ावा देते हैं। आज वे लोग वातावरण खराब कर रहे, हमें समझना होगा। कार्यक्रम में मंत्री ब्रजेश पाठक, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह आदि मौजूद रहे।

किसानों के खाते में आज दोपहर 12 बजे जमा होंगे 2000 रुपये

नई दिल्ली, एएनआई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 25 दिसंबर को दोपहर 12 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों के खातों में पैसे भेजेंगे। यानी कि 25 दिसंबर को पीएम किसान योजना की 7वीं किस्त किसानों के खातों में जमा हो जाएगी। जिसमें करीब 1800 करोड़ रुपये बांटे जाएंगे, जिससे 9 करोड़ से अधिक किसान परिवारों को फायदा होगा। बता दें कि इसके लिए पीएम मोदी ने ट्वीट कर कहा कि 25 दिसंबर का दिन देश के अन्नदाताओं के लिए बेहद अहम है। दोपहर 12 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए 9 करोड़ से अधिक किसान परिवारों को पीएम-किसान की अगली किस्त जारी करने का सौभाग्य मिलेगा। इस अवसर पर कई राज्यों के किसान भाई-बहनों के साथ बातचीत भी करूंगा।

बता दें कि पीएम किसान योजना के माध्यम से केंद्र सरकार किसानों के खातों में हर चार महीने में 2 हजार रुपये की किस्त जमा करती है। एक साल में कुल 6 हजार रुपये किसानों खातों में भेजे जाते हैं। यह योजना 1 दिसंबर, 2018 को लागू हुई थी। यह फंड सीधे लाभार्थी के बैंक खातों में ट्रांसफर किया जाता है।

गौरतलब है कि इस आयोजन के दौरान 6 अलग-अलग राज्यों के किसानों के साथ पीएम मोदी की बातचीत भी होगी। किसान कल्याण के लिए सरकार द्वारा की गई विभिन्न अन्य योजनाओं पर पीएम किसानों के साथ अपने अनुभव साझा करेंगे। इस दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री भी मौजूद रहेंगे। फिलहाल, पीएम किसान योजना के तहत किसानों के खातों में जो पैसे भेजे जाने हैं, वह 25 दिसंबर को ट्रांसफर किए जाएंगे, इसी दिन पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजेयी की जयंती भी है।

वंदे भारत ट्रेन सेट निर्माण के लिए चीनी कंपनी हुई अयोग्य घोषित

नई दिल्ली, एएनआइ। वंदे भारत ट्रेन सेट बनाने की दौड़ में शामिल चीन की एक कंपनी को करारा झटका लगा है। रेलवे ने एक चीनी कंपनी और उसके भारतीय साझीदार के कंसोर्टियम को 44 वंदे भारत ट्रेन सेट निर्माण के लिए अयोग्य घोषित कर दिया है। इस सिलसिले में चीनी कंपनी और उसके भारतीय साझीदार की बोली खारिज कर दी गई है। यह परियोजना लगभग 1,800 करोड़ रुपये की है।

इस टेंडर को लेकर केवल तीन कंपनियों ने बोली लगाई थी। इसमें बीजिंग स्थित सीआरआरसी योंगजी इलेक्ट्रिक लिमिटेड और भारत के पायनियर का संयुक्त उपक्रम था, जिसका हरियाणा में प्लांट है। रेलवे को निविदाओं का मूल्यांकन करने और इस पर अंतिम निर्णय लेने में लगभग चार सप्ताह का समय लगा। बता दें कि वन्दे भारत के 44 ट्रेन सेटों को बनाने के लिए पिछले साल भी रेलवे ने टेंडर जारी किया था, लेकिन तब चीन की कंपनी ने टेंडर के नियमों के अनुसार अपने को ढालते हुए एक नई कंपनी बना कर टेंडर किया था, जिसके चलते रेलवे ने वो टेंडर ही कैंसल कर दिया था। नए सिरे से निकाले गए टेंडर में चीन ने एक बार फिर एक भारतीय पार्टनर के साथ मिलकर कोशिश की थी, लेकिन इस बार फिर रेलवे ने अपने इस मेगा प्रोजेक्ट से चीन को दूर कर दिया है।

चीन से मुकाबले के लिए तैयार भारत, भूटान से लगी सीमा पर 22 अग्रिम चौकियां बनीं

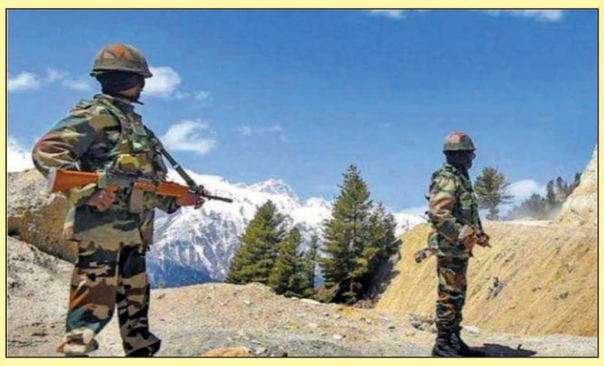

नई दिल्ली, एएनआइ। चीन से तनाव के बीच सशस्त्र सीमा बल ने भारत-भूटान सीमा के नजदीक 22 अग्रिम चौकियों का निर्माण किया है। ये सभी चौकियां सीमा से लगती प्रमुख जगहों पर बनाई गई हैं। इनके निर्माण के बाद अब एसएसबी के पास समुद्री स्तर से 12 हजार फीट की ऊंचाई पर बनी हुईं कई महत्वपूर्ण चौकियां हो गई हैं।

सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) को भारत-भूटान-तिब्बत की सीमा के पास तैनात किया गया है और जवान लगातार सीमा की सुरक्षा में लगे रहते हैं। सीमा पर नई चौकियां बनने की वजह से और गहन तरीके से सुरक्षा की जा सकेगी। बता दें कि एसएसबी जवानों का भारतीय सेना के जवानों के बराबर ही महत्व है। साल 2017 में चीनी सेना के साथ हुए लंबे गतिरोध के दौरान एसएसबी के जवान अपना जौहर दिखा चुके हैं।

इन नई 22 चौकियों के बनने के बाद, अब एसएसबी अपने स्वीकृत चौकियों को पूरा करने के बेहद करीब पहुंच चुकी है। यह संख्या कुल 734 की है और एसएसबी अब तक सीमा पर 722 चौकियां बना चुकी है। सिर्फ 12 का निर्माण ही बाकी रह गया है। एसएसबी के शीर्ष अधिकारी ने बताया, 'सीमा पर बनीं इन नई चौकियों की मदद से ट्राई-जंक्शन बॉर्डर पर एसएसबी की ताकत पहले के मुकाबले और अधिक बढ़ जाएगी। ये 22 चौकियों को रिकॉर्ड समय में बनाया गया है और ज्यादातर भारत-भूटान बॉर्डर के पास ही हैं।' सूत्रों ने आगे कहा कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर तनाव के बीच, इन चौकियों का निर्माण कार्य पिछले वर्षों में बनाई गईं चौकियों की तुलना में बहुत तेजी से किया गया है। वहीं, अधिकारी ने आगे कहा कि कुल स्वीकृत की गईं चौकियों में अब सिर्फ 12 चौकियों का निर्माण होना ही बाकी है। ये 12 चौकियां भारत-भूटान सीमा पर बनाई जानी हैं। ये वहां बनेंगी जहां पर लद्दाख की तरह तापमान माइनस जीरो हो जाता है। बता दें कि एलएसी पर चीन के साथ जारी गतिरोध की वजह से एसएसबी ने अपने एक भी जवान को ट्राई-जंक्शन समेत महत्वपूर्ण सीमा वाले इलाकों से अलग नहीं किया है। एसएसबी के अधिकारी ने बताया, 'एलएसी पर जारी तनाव के बीच, हमने अपने एक भी जवान को किसी भी लॉ एंड ऑर्डर ड्यूटी के लिए नहीं भेजा है। सभी जवान चौकियों पर ही तैनात हैं। वहीं, अगर स्टाफ की कमी होती भी है, तो उसे तुरंत पूरा कर लिया जाएगा। वर्तमान में, इन क्षेत्रों में तैनात एसएसबी की 100 प्रतिशत ताकत है।' उन्होंने आगे बताया कि हम अन्य हिस्सों से जवानों को वापस बुलाकर उन्हें जरूरत के अनुसार देश के अन्य हिस्सों में भेज रहे हैं। प्रमुख सीमा क्षेत्रों में तैनात जवानों की संख्या भविष्य में भी कम नहीं की जाएगी।

अभी और बढ़ेगी ठंड, मौसम विभाग ने इन राज्यों के लिए जारी किया शीतलहर का अलर्ट

पहाड़ी इलाकों में हुई बर्फबारी और उत्तर-पूर्व से आने वाली हवा की वजह से आज से फिर ठंड के जोर पकड़ सकती है। दूसरी ओर राजस्थान के माउंट आबू में पिछले 10 दिनों से सुबह के समय जगह-जगह ओस की बूंदें बर्फ में तब्दील हो रही हैं।

नई दिल्ली, एजेंसी। पिछले तीन-चार दिनों से ठंड से मिली राहत के बाद अब पारा फिर से लुढ़कने वाला है। मौसम वैज्ञानिकों ने यूपी, दिल्ली, पंजाब-हरियाणा, छत्तीसगढ़ और बिहार जैसे मैदानी राज्यों में शीतलहर की संभावना जताई है। पहाड़ी इलाकों में हुई बर्फबारी और उत्तर-पूर्व से आने वाली हवा की वजह से आज से फिर ठंड के जोर पकड़ सकती है। दूसरी ओर राजस्थान के माउंट आबू में पिछले 10 दिनों से सुबह के समय जगह-जगह ओस की बूंदें बर्फ में तब्दील हो रही हैं। दिल्ली में लोधी रोड पर बुधवार को न्यूनतम तापमान 3.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। यहां अगले 4-5 दिन पारा 3 और 4 डिग्री के बीच रहने की उम्मीद है। पश्चिमी हवाओं की वजह से दिल्ली में ठंड जारी रहने का अनुमान है।

हरियाणा में हिसार का तापमान लगातार दूसरे दिन सबसे नीचे 2.7 डिग्री पर रहा। कुछ इलाकों में सुबह पाला भी जमा। धुंध के चलते करनाल में विजिबिलिटी 50 मीटर रह गई। रोहतक में दिन का पारा 17.8 डिग्री पर आ गया, जो सामान्य से 4 डिग्री कम है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि कड़ाके की सर्दी का दौर 25 दिसंबर तक जारी रह सकता है। इस दौरान शीतलहर चलने के भी आसार हैं।

मौसम वैज्ञानिकों ने पंजाब के सभी जिलों में अगले दो दिन शीतलहर चलने की चेतावनी दी है। इससे रात के समय कड़ाके की ठंडी पड़ेगी। राज्य का औसत तापमान रात के समय 3 से 5 डिग्री और दिन का 20 डिग्री के आसपास दर्ज किया गया है। पंजाब के विभिन्न जिलों में 27 दिसंबर को बारिश के आसार हैं। इनमें दोआबा और अमृतसर क्षेत्र शामिल है। पंजाब का लुधियाना 2.8 डिग्री के साथ सबसे ठंडा रहा।

देश के उत्तरी भाग में हो रही बर्फबारी से राजस्थान सहित हिल स्टेशन माउंट आबू में भी कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। छह दिन तक लगातार माइनस में दर्ज होने के बाद बुधवार को यहां पारा प्लस में आया है। पिछले 10 दिनों से माउंट आबू में सुबह जगह-जगह ओस की बूंदे बर्फ में तब्दील हो रही हैं। बुधवार को यहां का न्यूनतम तापमान 0.4 डिग्री सेल्सियस तथा अधिकतम तापमान 21 डिग्री दर्ज किया गया।

भोपाल में रात के समय ठंडक बनी हुई है। यहां दिन में दक्षिण-पूर्वी हवा चल रही है, जबकि शाम होते ही यह बदलकर उत्तर-पूर्वी हो जाती हैं। भोपाल में बुधवार रात का तापमान 9.6 डिग्री दर्ज किया गया।

पटना सहित बिहार के कई इलाकों में मौसम वैज्ञानिकों ने घने कोहरे की चेतावनी जारी की है। इस दौरान 10 से 12 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से उत्तर-पश्चिम दिशा से बर्फीली हवाएं चलेंगी। अरब सागर से आने वाली नमीयुक्त हवाओं की वजह से पटना सहित बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में कोहरे की चादर फैली हुई है। बुधवार को छपरा, दरभंगा और मुजफ्फरपुर में कोल्ड डे रहा। गया में रात सबसे सर्द और फारबिसगंज में दिन सबसे गर्म रहा। झारखंड में अभी 29 दिसंबर तक कड़ाके की ठंड नहीं पड़ेगी। पश्चिमी विक्षोभ की वजह से अधिकतम तापमान में 2 डिग्री की बढ़ोतरी हुई है। दो दिन बाद 26 दिसंबर को अधिकतम तापमान में और इजाफा होगा, क्योंकि उत्तर भारत से एक और मजबूत पश्चिमी विक्षोभ झारखंड में प्रवेश करने वाला है। इस वजह से कहीं-कहीं हल्की बारिश हो सकती है। बुधवार को रांची का अधिकतम तापमान 25 डिग्री दर्ज किया गया। हवा की दिशा बदलने की वजह से छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर समेत प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में तापमान में बढ़ोतरी हुई है। बुधवार को प्रदेश में दुर्ग को छोड़कर कहीं भी शीतलहर के हालात नहीं थे। मौसम विभाग के मुताबिक, गुरुवार से प्रदेश में उत्तर-पूर्वी हवाओं के फिर चलने से ठंड बढ़ेगी। सरगुजा और बिलासपुर में रात से ही शीतलहर चल सकती है। मैदानी इलाकों और बस्तर में एक-दो दिन बाद ठंड बढ़ने के आसार हैं।

देश के सभी बिजलीघरों के सुरक्षा हालात पर रिपोर्ट दे केंद्र

नई दिल्ली, प्रेट्र। तमिलनाडु के नेवली लिग्नाइट पावर प्लांट में हुए बॉयलर ब्लास्ट के मामले का संज्ञान लेते हुए एनजीटी ने केंद्र सरकार को थर्मल पावर स्टेशनों में सुरक्षा स्थितियों का जायजा लेने का निर्देश दिया है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने सभी तापीय बिजलीघरों की सुरक्षा व्यवस्थाओं का ऑडिट छह महीने में पूरा कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा है। इससे दुर्घटनाओं और जहरीली गैसों के रिसाव की घटनाओं से बचा जा सकेगा।

एनजीटी प्रमुख जस्टिस आदर्श कुमार गोयल की अध्यक्षता वाली पीठ ने मामले में गठित कमेटी की संस्तुतियों के आधार पर यह निर्देश दिया। कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार नेवली बिजलीघर में हालात से निपटने में कर्मचारियों की विफलता दुर्घटना का मुख्य कारण थी। कर्मचारियों को बॉयलर संचालन की कार्यप्रणाली की सही जानकारी नहीं थी। कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त नहीं थे और उनके पास बॉयलर पर कार्य करने की जरूरी अनुमति भी नहीं थी। इसलिए बिजलीघर में सुरक्षा और संचालन के लिए नियुक्त अधिकारी दुर्घटना के लिए जिम्मेदार थे। यहां फैक्ट्री एक्ट 1948 में उल्लेखित सुरक्षा मानदंडों के प्रावधानों का उल्लंघन हुआ था। नेवली बिजलीघर में निर्माण, भंडारण और खतरनाक रसायनों के आयात संबंधी 1989 में बने नियमों का भी उल्लंघन हो रहा था। पीठ ने कहा, भारत सरकार के ऊर्जा और कोयला मंत्रालय अन्य एजेंसियों के सहयोग से पूरे देश में चल रहे थर्मल पावर प्लांट में लगे बॉयलर का निरीक्षण करें और अपनी रिपोर्ट दें। एनजीटी ने सभी बिजलीघरों को भी निर्देश दिया कि वे सुरक्षा के सभी मानदंडों का इस्तेमाल करें। इससे पहले नेवली लिग्नाइट पावर प्लांट में हुए बॉयलर ब्लास्ट मामले में एनजीटी ने एनएलसी इंडिया लिमिटेड पर पांच करोड़ रुपये का अर्थदंड लगाया था। यह कंपनी नेवली पावर प्लांट संचालित करती है। बीती एक जुलाई को हुई दुर्घटना में 13 कर्मचारी मारे गए और 10 घायल हुए थे। मामले की जांच के लिए एनजीटी ने स्वतंत्र कमेटी भी गठित की थी, जिसने अब रिपोर्ट दी है।

विवादित संगठन पीएफआइ को बैंक खातों में सौ करोड़ रुपये से अधिक मिले, सीएए विरोधी प्रदर्शनों और दिल्ली दंगों में था शामिल

कोच्चि, प्रेट्र। प्रवर्तन निदेशालय ने पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआइ) के मनी लांड्रिंग की जांच का ब्योरा गुरुवार को अदालत में दिया गया है। केरल के इस विवादित संगठन पीएफआइ ने कई सालों में अपने बैंक खातों में सौ करोड़ रुपये से अधिक जमा कराए हैं। पीएफआइ के छात्र विंग के नेता केए राउफ शरीफ को पीएमएलए के तहत मनी लांड्रिंग के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। विशेष अदालत में उसका बयान दर्ज कर लिया गया है। ईडी की याचिका पर अदालत ने शरीफ की हिरासत की अवधि और तीन दिनों के लिए बढ़ा दी। उसकी सात दिन की ईडी की हिरासत गुरुवार को समाप्त हो गई थी, जिस कारण उसे अदालत में पेश किया गया था। ईडी ने अपने हलफनामे में इस रकम के स्त्रोत और वसूली का ब्योरा दिया है जिसकी जांच जारी है। ईडी का कहना है कि पीएफआइ के बैंक खातों में कई सालों में सौ करोड़ रुपये से अधिक की रकम जमा की गई है और इसमें से अधिकांश नकद है। इसमें यह भी आरोप लगाया गया है कि वर्ष 2013 से पीएफआइ अवैध लेन-देन, नकदी जमा करने में संलिप्त है। यह गतिविधियां वर्ष 2014 से अत्यधिक बढ़ गई हैं। जांच में यह भी पता चला है कि पीएफआइ दिसंबर-2019 से फरवरी-2020 तक चले सीएए-विरोधी प्रदर्शनों में शामिल था और दिल्ली के दंगों में उसके सदस्यों की सक्रिय भागीदारी थी। जांच एजेंसी ईडी ने हलफनामे में कहा कि बेंगलुरु शहर में हाल में हुई हिंसा से भी पीएफआई का हाथ होने के बारे में संकेत मिले हैं। इस घटना में पीएफआई की राजनीतिक शाखा एसडीपीआई की संलिप्तता पाई गई थी। अतीत के विभिन्न मामलों में भी इसकी संलिप्तता रही है, जिनमें लोक-व्यवस्था में खलल डालने की कोशिश की गई थी।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज शुक्रवार, 25 दिसम्बर, 2020

संक्षेप समाचार

जमीन पर निर्माण कार्य करने के लिए दो लाख मांगा गया गुंडा टैक्स, मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। बैनामा की जमीन पर निर्माण कार्य के लिए सामग्रियां गिराने पर पहले हमला कर दिया गया तथा महिलाओं ने जमकर कर उत्पात मचाए। और दो लाख रुपये गुंडा टैक्स की मांग की गयी । भुक्तभोगी ने थाने में तहरीर दे कर चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मऊआइमा कस्बा के स्टेशन रोड निवासी जमालुर्रशीद पुत्र किस्मत उल्ला ने मोहल्ला महतवाना में एक जमीन बैनामा से अपने पुत्र के नाम से खरीदा है । बताया गया है कि जमालुर्रशीद अपने तीन साथियों के साथ जमीन पर निर्माण कार्य कराने के लिए निर्माण सामग्रियां के लिए जमीन साफ करा रहे थे । आरोप है कि तभी पडोसी हमलावर हो गए और महिलाओं ने जमकर ईट पत्थर चलाए और जान से मार डालने की धमकी दी गई। तथा दो लाख रुपये गुंडा टैक्स की मांग की गई न देने पर किसी भी हाल में निर्माण कार्य न होने की धमकी भी दी गई। जमालुर्रशीद ने मऊआइमा थाने में इरफान पुत्र अब्दुल अजीज, अख्तर पुत्र जमील, तथा जमाल फात्मा और शाहिना बानों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज करा दिया है ।

घर के अंदर बिस्तर पर धारदार हथियार से किशोर की हत्या, परिजनों में मचा कोहराम

जारी। स्थानीय थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत बडगोहना कलां के मजरा पीतांबर का पूरा मे बीती रात 14 वर्षीय अमन बिंद पुत्र राम प्रकाश बिंद उर्फ गुलाब की धारदार हथियार से घर के अंदर बिस्तर पर हत्या कर दी गई। सुबह 5 बजे बहन जानकी 17 उठी तो घर का दरवाजा खुला था घर के काम मे लग गई , 7 बजे पिता राम प्रकाश बिन्द उर्फ गुलाब ने अमन से बात करने के लिए फोन किया तो बहन जानकी ने बिस्तर खोल तो देखा अमन बिस्तर पर खून से लथपथ पड़ा था अमन को खून से लथपथ देख बहन चीखने चिल्लाने लगी शोर सुन कर आसपास के स्वजनो एवं ग्रामीणों की भीड़ इकट्ठा हो गई । वही पिता राम प्रकाश बिन्द उर्फ गुलाब व मां कमला देवी जो कौंधियारा थाना क्षेत्र के ही भरहरा रिश्तेदारी में गए थे तुरंत घर पहुंचे,घर पर भाई अमन व बहन जानकी ही थे अमन बिन्द मां बाप की इकलौती संतान था जो गांव के ही पूर्व माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 6 का छात्र था सूचना पर पहुंचे मां-बाप दहाड़ मार कर रोने लगे। बड़गोहना ग्राम प्रधान ननकी देवी के पुत्र विधाधर की सूचना पर थानाध्यक्ष कौधियारा कुलदीप तिवारी एस पी क्राइम आशुतोष तिवारी, एस ओ जी जमुनापार प्रभारी वृन्दावन राय,क्षेत्राधिकारी बारा अजीत कुमार रजक चौकी प्रभारी जारी मनीष सिंह, पुलिस फोर्स के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। एस पी क्राइम आशुतोष तिवारी ने परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए जल्द मामले का खुलासा किया जयेगा पिता रामप्रकाश गुलाब की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर शव को अत्यंत परिक्षण के लिए भेज दिया गया।

किशोर की मौत के बाद रोते बिलखते परिजन

मृतक किशोर की फाइल फोटो

बेतरतीब पार्किंग ट्रक का ई-चालान करती पुलिस

हाईवे पर ट्रकों की बेतरतीब पार्किंग भी हादसे के लिए जिम्मेदार, पुलिस ने थमाया ई-चालान

शंकरगढ़। जनपद में हाल के दिनों में बढ़ी सड़क दुर्घटनाओं के लिए सडकों व मुख्यतः हाईवे पर वाहनों की बेतरतीब पार्किंग भी जिम्मेदार है। घना कोहरा होने के कारण जब तक लोग एलर्ट होते हैं, तब तक घटना घट जाती है। हाईवे पर ट्रक चालकों द्वारा की जाने वाली बेतरतीब पार्किंग को लेकर गुरुवार को यमुनापार की शंकरगढ़ पुलिस ने अभियान चलाकर कई ट्रकों का ई-चालान किया। यूपी-एमपी की सीमा पर स्थित थाना शंकरगढ़ के थानाध्यक्ष राजेश उपाध्याय की अगुवाई में बेतरतीब वाहनों के खिलाफ अभियान चलाकर चालान किया गया। इसके तहत शंकरगढ़ पुलिस ने एनटीपीसी-अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री के सामने राष्ट्रीय राजमार्ग पर बेतरतीब खड़े वाहनों का का चालान किया। पुलिस के द्वारा चलाए गए अभियान की जानकारी होते ही ज्यादातर वाहन चालक मौके से नौ-दो ग्यारह हो गए। हालांकि इस दौरान पुलिस ने कार्यवाही करते हुए 10 ट्रकों से 50000 का ई -चालान किया और जुमार्ना भी वसूला। इस दौरान थानाध्यक्ष राजेश उपाध्याय ने संबंधित फर्मों को हिदायत देते हुए कहा कि सभी को नोटिस दी गई है, यदि इसमें सुधार नहीं होता तो आगे सख्त कार्यवाही की जाएगी।

कच्ची शराब बनाने वालों पर चला आबकारी टीम का डंडा

कच्ची शराब व लगन नष्ट करती आबकारी टीम

हनुमानगंज। सरायइनायत थाना क्षेत्र के कोटवाँ,मुसहा दलापुर सहित गंगा के कछारी क्षेत्र में बुद्धवार को आबकारी टीम द्वारा कच्ची शराब बनाने वालों के विरुद्ध की गई बड़ी कार्यवाही। उप आबकारी आयुक्त प्रयागराज के निर्देशन में चलाये जा रहे प्रवर्तन अभियान के तहत 24 दिसम्बर बुद्धवार को आबकारी विभाग द्वारा सरायइनायत थाना क्षेत्र के कोटवां गांव सहित कई संदिग्ध स्थानों पर अवैध कच्ची शराब के निर्माण व बिक्री के विरुद्ध प्रवर्तन अभियान चलाया गया। आबकारी निरीक्षक फूलपुर नेहा कुमारी सिंह की ,संयुक्त टीम द्वारा तथा आबकारी निरीक्षक अमित कुमार तथा एसएसएफ और,प्रवर्तन टीम व हंडिया निरीक्षक के साथ ताबडतोड दबिश दी गई। जिसमें कच्ची शराब बनाने वालों के यहाँ छापे मारी के दौरान प्लास्टिक जरिकेन में जमीन के अंदर गड़ा करीब 7 कुन्तल लहन नष्ट कियागया । मौके पर कुल 21भट्ठियाँ को नष्ट कियागया। तथा शराब बनाने का उपकरण जब्त कियागया मौकेपर 350 लीटर कच्ची शराब बरामद किया गया। और कच्ची शराब उतारने वाले 5 फरार व्यक्तियों के खिलाफ आबकारी अधिनियम के तहत थाने में अभियोग पंजीकृत कराया गया। टीम में आबकारी निरीक्षक नेहा कुमारी अमित श्रीवास्तव एसएसएसएफ , कौशलेंद्र प्रताप सिंह आबकारी निरीक्षक हंडिया , हमराह स्टाफ उपस्तिथ रहे।

सपा के भागीरथी बिंद बनें बारा विधानसभा अध्यक्ष

करछना। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने आगामी पंचायत चुनाव तथा विधान सभा चुनाव में सपा समर्थकों के निर्देश पर पार्टी को मजबूत बनाने और को लेकर प्रयागराज के बारा विधानसभा का भागीरथी बिंद को अध्यक्ष मनोनीत किया ,सपाइयों ने खुशी का इजहार करते हुए क्षेत्र के मोती लाल चौराहा गडैला में एक गोष्ठी का आयोजनकर बधाई दी और कहा कि भागीरथी बिंद को बारा विधानसभा अध्यक्ष बनाएं जाने पर बिधान सभा और मजबूत होगी और पार्टी को एक नयी दिशा मिलेगी ।तथा कार्यकताओं ने राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के इस तरह से कदम उठाये जाने की बधाई दी । गोष्ठी में बधाई देने वालों में मोहन लाल यादव, सपा गायक, विनय कुमार सिंह यादव, नटवर सिंह, डाक्टर रमेश यादव, उदय राज अम्बेडकर, डाक्टर शरद यादव, आलोक यादव सहित बड़ी संख्या में सपा कार्यकर्ताओ ने बधाई दी।

काम न मिलने पर मनरेगा मजदूरों ने विरोध रैली निकाली तो पहुंचे अधिकारी

घूरपुर। बीकर गांव के मजदूरों ने गुरुवार के दिन मनरेगा की मजदूरी और काम से लौटाने को लेकर भारतीय किसान मजदूर सभा के बैनर तले रैली निकाली। मजदूरों द्वारा रैली निकालने की सूचना ब्लॉक तक पहुंची तो हड़कम्प मच गया ।मौके पर बीडीओ व सचिव पहुंचे और मजदूरों को बकाया मजदूरी अविलंब दिलाने व मनरेगा में काम देने का आश्वासन दिया तो मजदूर शांत हुए और अपने काम पर लौटे ।

बता दे कि बीकर गांव सहित कई गांवों में कोरोना संक्रमण काल मे मनरेगा सहित कई योजनाएं निष्क्रिय हो गई थी । मजदूरों की मनरेगा की मजदूरी भी बकाया पड़ी थी ।साथ ही कुछ मजदूरों की मजदूरी गलत तरीके से निकाल ली गई थी ।जिसकी शिकायत कई बार मजदूर कर चुके हैं ।गुरुवार के दिन सैकड़ो मजदूर मनरेगा के तहत चल रहे काम पर पहुंचे तो वहां मौजूद रोजगार सेवक ने मजदूरों को अपनी जिम्मेदारी पर काम देने से मना कर दिया । जिस पर मजदूर काम ना मिलने से नाराज हो गए और शिकायत लेकर भारतीय किसान मजदूर सभा के नेताओ के पास पहुंच गए । मजदूरों की समस्या सुन मजदूर नेताओ के आह्वाहन पर सैकड़ो मजदूर नारे बाजी करते हुए गांव में रैली निकाल दी ।सूचना ब्लॉक जसरा तक पहुंची तो संबंधित ग्राम विकास अधिकारी सहित बीडीओ मौके पर पहुंच गए । उग्र मजदूरों को रोक बीडीओ ने बात की और भरोसा दिलाया कि उनकी बकाया मजदूरी भी मिलेगीसाथ ही दोषियों के खिलाफ कार्रवाई और उन्हें आज से ही काम मिलेगा ।बीडीओ की बात से सहमत मजदूर काम पर लौटे। इस बीच घंटो गहमागहमी मची रही ।

काम न मिलने पर विरोध में रैली निकालते मनरेगा मजदूर

माफिया और पूर्व सांसद अतीक के करीबी आबिद प्रधान के मकान को पीडीए ने किया ध्वस्त

प्रयागराज। जिले में माफिया के खिलाफ प्रयागराज विकास प्राधिकरण और पुलिस का शिकंजा लगातार कस रहा है। आपरेशान माफिया पर कार्रवाई के क्रम में गुरुवार को पूर्व सांसद और माफिया अतीक अहमद के एक और करीबी गुर्गे के आलीशान मकान पर जेसीबी चली। धूमनगंज में मरियाडीह का आबिद प्रधान अतीक अहमद का करीबी शूटर है। उसके मरियाडीह स्थित आलीशान अवैध निर्माण पर पीडीए कार्रवाई कर रही है। पीडीए अफसरों का कहना है कि बिना नक्शा पास कराए अपराधी आबिद प्रधान ने यह निर्माण कराया था। पीडीए की कार्रवाई से इलाके में खलबली मची रही। शाम तक मकान को ढहा दिया गया।

ऑपरेशन माफिया के तहत गुरुवार को माफिया अतीक अहमद के गुर्गे और हार्ड कोर क्रिमिनल आबिद प्रधान के लालबिहारा के रसूलपुर मारिया डीह स्थित अवैध निर्माण को ध्वस्त करने की कार्रवाई शुरू कर दी है। आबिद ने बिना नक्शा पास कराए आलीशान मकान बनवाया था।

बसपा विधायक राजू पाल हत्या में आबिद भी आरोपित है। इसके अलावा धूमनगंज के मरिया डीह में अपनी चचेरी बहन और ड्राइवर की हत्या करने का भी आरोप है। आबिद ने अतीक के इशारे पर कई वारदातों को अंजाम दिया है। आबिद पर दो दर्जन से ज्यादा मुकदमे दर्ज हैं। हाल में ही वह जमानत पर बाहर आया है। कई थाने की फोर्स के साथ टीम ने चार जेसीबी से मकान ध्वस्त करना शुरू किया तो शाम तक पूरी तरह गिरा दिया। इसके बाद पीडीए की टीम ने अतीक के गुर्गे अकबर के भी मकान पर कार्रवाई शुरू कर दी।

मकान ध्वस्त करता पीडीए का जेसीबी

इफको अमोनिया गैस कांड की तकनीकी जांच को पहुंचा दल

फूलपुर। इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड इफको में मंगलवार रात अमोनिया गैस पाइप का टायराइट का पलंजर टूटने से बड़ा हादसा हो गया था। जिसमें दो अधिकारियों की मौत से पूरे प्रबंध तंत्र सहित सरकार के सामने बड़ी चुनौती खड़ी हो गई थी। जिसको लेकर सरकार ने हादसे की जांच कराने के लिए समिति गठित की वहीं इफको के प्रबंध निदेशक उदय शंकर अवस्थी ने भी जांच टीम गठित कर हादसे की विस्तृत जानकारी मुख्यालय में तलब की। गुरुवार को प्रसाशन की ओर से कारखाने के तकनीकी जानकारी के लिए पांच सदस्यीय टीम ने इफको यूरिया 1 प्लांट का गहन निरीक्षण कर हादसे की असली वजह जानने की कोशिश किया। जांच टीम में प्रयागराज, नोएडा व कानपुर के तकनीकी विशेषज्ञों की टीम बनाई गई। जिसमे निदेशक कारखाना कानपुर ओपी भारती, उपनिदेशक कारखाना कानपुर डीपीएस तोमर, उपनिदेशक कारखाना नोएडा राम बहादुर, उपनिदेशक कारखाना प्रयागराज एसी गुप्ता, सहायक निदेशक कारखाना प्रयागराज जगदीश प्रसाद ने दुर्घटना के कारणों की रिपोर्ट शासन को भेज दी। वहीं दिनभर इफको परिसर व कारखाने में सन्नाटा पसरा रहा।अब प्रबंधन की दो सदस्यीय टीम की भी जांच रिपोर्ट आने के बाद ही हादसे से पर्दा हट सकता है।

इफको की फूलपुर इकाई में पहुंची विशेषज्ञों की टीम

सपा के ब्लाक अध्यक्ष बने अनिल सिंह पटेल, हर्ष

नवनियुक्त ब्लाक अध्यक्ष अनिल सिंह पटेल को माला पहना सम्मानित कर पत्र देते हुए

घूरपुर। घूरपुर क्षेत्र के सपा के युवा नेता अनिल सिंह पटेल को चाका ब्लाक के अध्यक्ष बनाए जाने पर क्षेत्र के सपाइयों में खुशी की लहर है। क्षेत्र के बादलगंज पालपुर गांव निवासी सपा युवा नेता अनिल सिंह पटेल को समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने चाका ब्लाक का अध्यक्ष मनोनीत किया। जिला अध्यक्ष योगेश चन्द्र यादव व जिला महासचिव संदीप पटेल ने नव नियुक्त ब्लाक अध्यक्ष अनिल सिंह पटेल को माला पहना स्वागत कर नई जिम्मेदारी दी। अध्यक्ष बनाए जाने की सूचना पर क्षेत्र के सपाइयों में खुशी की लहर है।

सब्जियों कें दाम में भारी गिरावट अन्नदाता में छायी मायूसी

करमा। वर्तमान समय सब्जियों का बाजार बहुत ही मंदी एवम दयनीय दशा में हैं ।यमुनापार की सबसे बड़ी थोक मंडी नवीन मंडी स्थल जसरा सहित क्षेत्र कें घूरपुर, करमा, सरंगापुर, ग्लासफैक्ट्री, पूरेखगन एवम चंपतपुर इत्यादि सब्जी मंडियों में गोभी, पालक, मूली, बैंगन, धनिया इत्यादि सब्जियों कें दाम में भारी गिरावट हैं साथ ही शीतलहर कें कारण स्थानीय सब्जी मंडियों में ग्राहक भी काफी कम मात्रा में आते हैं। यमुनापार कें जसरा विकासखंड कें विभिन्न गाँवों की कृषि काफी उन्नतशील एवम अग्रणी रहीं हैं यही वजह हैं इस क्षेत्र कें मनकवार, सेमरा, गौहनिया, बूँदावा, कांटी, जारी, रेही, मौहरिया, चितौरी कें गाँवों में मटर, बैगन, गाजर, पालक, मिर्च, गोभी, प्याज इत्यादि की खेती बहुत व्यापक पैमाने पर होती हैं यही वजह है कि इन क्षेत्रों में काफी खुशहाली एवम आर्थिक समृद्धि रहती है यहाँ की उपजाऊ मिट्टी कें कारण उक्त गाँवों की भूमि भी काफी महँगी हैं विगत कई वर्षों से मौसम एवम आवारा पशुओं कें दंश झेलते हुए भी इस वर्ष सब्जियों की खेती व्यापक पैमाने पर हुई हैं।

'बिहंसी वसुंधरा नभ लगा बजाने बाजा, अवध में राजाराम जन्मे'

करछना। क्षेत्र के बालापुर गांव में आयोजित सुकृत जन्मोत्सव समारोह में लोकमंगल संस्थान के कलाकारों ने खूब समां बांधी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे लघु सिंचाई विभाग उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यअभियंता डी.एन. शुक्ला, विशिष्ट अतिथि विजय चितौरी, अध्यक्षता श्याम लाल बेगाना और संचालन हास्य कवि अशोक बेशरम ने किया ।लोक कलाकार रामबाबू यादव द्वारा देवी वंदना के उपरांत प्रस्तुत गीत, बिंहसी बसुंधरा नभ लगा बजाने बाजा, अवध में राजा राम जन्मे, खूब सराहा गया। बृजेश तिवारी, मोहिनी श्रीवास्तव, इंद्रजीत यादव और मोनू मस्ताना के सोहर गीतों ने भी खूब तालियां बटोरी। सूर्य प्रताप तिवारी द्वारा प्रस्तुत गीत के उपरांत श्यामलाल बेगाना ने संस्कार गीतों की प्रस्तुतियों से खूब समां बांधी। कवि डॉ अमरनाथ सिंह,बेचन विनोदी, संतोष शुक्ला समर्थ, फतेह बहादुर सिंह ऋषिराज, जीतेंद्र जलज, सबरेज अहमद ने भी काव्य रस की फुहार से श्रोताओं को आह्लादित किया। लोकमंगल संस्थान के प्राचार्य कभी राम लोचन सांवरिया ने कलाकारों की प्रस्तुतियों के लिए सभी की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह लोक कलाकार ही हमारी संस्कृति, संस्कार और परंपरा को पूरे जमुनापार में आगे बढ़ा रहे हैं जो बहुत सराहनीय है। संयोजक गीतकार राजेंद्र शुक्ल ने सभी कलाकारों और कवियों का मंच पर सारस्वत सम्मान किया।

लोक मंगल संस्थान के कलाकारों ने बांधी समा

पेड़ पौधें होगें नष्ट जो बेशक जीवन में होंगें अनेकों कष्ट : ए.पी. सिंह

करमा। प्रदूषण दिन -प्रतिदिन हमारे पर्यावरण को नष्ट करतें जा रहा हैं इसे रोकने कें लिए हमें जरूरी कदम उठाने की आवश्यकता हैं ताकि पृथ्वी पर जीवन बचा रहें यदि हम अब भी इस समस्या का समाधान करनें बजाय इसे अनदेखा करतें रहेंगें तों हमें भविष्य में इसके घातक परिणाम भुगतने होंगेंसाथ ही दिनोंदिन तेजी से बढ़ती आबादी कें कारण कृषि एवम आवासीय भूमि बनाने कें लिए प्रतिदिन बहुसंख्यक मात्रा में हरे पेड़ काटे जा रहें हैं जबकि उनके स्थान पर बहुत ही कम मात्रा में पौधों को रोपा जा रहा हैं जिसके कारण पर्यावरण में अनेकों विषमताएँ जन्म लें रहीं हैं जो किसी भी दशा में मानव एवम पर्यावरण कें सुखद नही हैं उक्त बातें क्षेत्र कें शिटकहिया में स्थित श्री सेठ राम अभिलाष पटेल इंटर कालेज में शनिवार को आयोजित पुष्प प्रदर्शनी एवम वृक्षारोपण कार्यक्रम कें दौरान संस्थान कें प्रबंधक श्री ए.पी. सिंह नें विद्यार्थियों कें सम्बोधन में बोलें साथ ही श्री सिंह नें यह भी बताया कि पेड़ -पौधें हमारे जीवन कें अभिन्न अंग हैं जिस दिन संसार का अंतिम पेड़ काटा जाएगा उसी दिन इस धरा पर जीवन की अभिलाषा नगण्य हों जायेगी इसी दौरान प्रबंधक श्री सिंह नें विद्यार्थियों को गुलदाउदी, थैण्डस, बेला, पारिजात, ऐग्जोरा, अशोक, नीलकमल, गुड़हल, पीपल इत्यादि पौधों को विद्यार्थियों में वितरण कें साथ इन पौधों की खूबियों कें विषय में भी अपने अनुभव साझा किये इस अवसर पर श्री सिंह नें अपने संबोधन कें अंत में सभी लोगों से प्रतिवर्ष विभिन्न त्योहारों, शुभ अवसरों पर पौधें लगाने एवम भेंट करनें रस्म प्रारम्भ करनें की भी अपील किये ।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

यीशु का जन्म परमेश्वर के महान प्रेम का प्रतीक : बिशप आर.बी. लाल

नैनी, प्रयागराज। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के यीशु दरबार चर्च परिसर में जगह- जगह यीशु जन्मोत्सव की झांकियाँ सजायी गई हैं। मुक्तिदाता प्रभु यीशु मसीह के आगमन को लेकर हर्ष का माहौल है। यीशु दरबार चर्च को भी सभी ने मिलकर सजाया है जहाँ शआट्स कुलपति एवं यीशु दरबार चर्च के बिशप मोस्ट रेव्ह. प्रो0 राजेन्द्र बी. लाल सभा को सम्बोधित करेंगे। यीशु दरबार चर्च सभा को यू-ट्यूब के माध्यम से आनलाईन प्रसारित किया जायेगा। कोविड-19 के कारण आनलाईन माध्यम से अनुयाईगण शामिल होंगे। झांकियों में यीशु जन्म के समय तारा का चमकना, चरनी में प्रभु यीशु का जन्म, यीशु जन्म के समय भविष्यवाणी आदि प्रमुख हैं। क्रिसमस की पूर्व संध्या पर बिशप मोस्ट रेव्ह प्रो0 राजेन्द्र बी. लाल ने अपने संदेश में कहा कि यीशु का जन्म परमेश्वर के महान प्रेम का प्रतीक है। सृष्टि का रचना करने वाला प्रभु धरती पर मनुष्य के मध्य आया और जितनों ने उसे पहचाना व ग्रहण किया उसे उसने परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया। बिशप लाल ने कहा कि यीशु मसीह पूर्णतः पाप से रहित था परन्तु उसने हमारे पापों के दंड को अपने ऊपर ले लिया। यीशु नाम का अर्थ है ह्यछुड़ानेवालाह्ण और मसीह का अर्थ है ह्यअभिषिक्तह्ण, अर्थात परमेश्वर के द्वारा अभिषिक्त छुड़ानेवाला। पाप के दण्ड से छुटकारा देने वाला, परमेश्वर का अभिषिक्त।

कछार से मिला लापता युवक का शव, आक्रोशित लोगों ने एक आरोपित का घर फूंका

रोते बिलखते मृतक के परिजन व आक्रोशित लोगों द्वारा जलाया गया एक आरोपित का घर

प्रयागराज। जिले में फाफामऊ गंगा कछार से 16 दिसंबर की रात से लापता मनीष कुमार का शव गुरुवार को पुलिस ने बरामद कर लिया। घटना वाली रात मनीष अपने एक साथी के कछार में अपनी फसल की रखवाली कर था। तभी मनीष के साथी मिथुन को गोली मार दी गई थी जिसका अस्पताल में इलाज चल रहा है जबकि मनीष उसी दिन से गायब था। मामले की जांच में जुटी पुलिस ने बुधवार रात मुठभेड़ में एक आरोपित को राजाबाबू को पकड़ लिया था। उससे पूछताछ के बाद मनीष के शव को फाफामऊ गंगा कछार से बरामद कर लिया गया। मनीष की हत्या से नाराज लोगों ने एक आरोपित की गंगा के किनारे स्थित झोपड़ी को फूंक दिया।

सोरांव थाना क्षेत्र के पुराना फाफामऊ निवासी मनीष कुमार 20 पुत्र स्वर्गीय अच्छेलाल 16 दिसंबर की रात फाफामऊ गंगा कछार में अपने फसल की रखवाली कर रहा था। मऊआइमा थाना क्षेत्र निवासी उसका दोस्त मिथुन भी साथ में था।

बताते हैं रात में वहां शिवकुटी थाना क्षेत्र के आशीष, ननके, राजाबाबू, मंजीत और आकाश पहुंचे और धारदार हथियार और तमंचे से उन पर हमला बोल दिया। फायरिंग और शोर सुनकर आसपास खेतों में मौजूद लोग मौके पर पहुंचे तो मिथुन घायल अवस्था में मिला, उसकी गर्दन में गोली लगी थी जबकि मनीष मौके से गायब था। लोगों ने पुलिस को सूचना देते हुए मिथुन को स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल भेजा। मामले में मिथुन की मां गुड्डी देवी ने शिवकुटी के आशीष, ननके, राजाबाबू, मंजीत और आकाश के खिलाफ सोरांव थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

पुलिस गायब मनीष की तलाश में जुटी थी कि एक आरोपित राजाबाबू बुधवार की रात फाफामऊ के गंगा कछार में दिखाई दिया। पुलिस ने उसे रोका तो वह फायरिंग करते हुए भागने लगा, जवाबी फायरिंग में एक गोली उसके पैर में लगी तो वह गिर पड़ा। पुलिस ने उसे पकड़कर पूछताछ शुरू की तो बताया कि मनीष की गोली मारकर हत्या करने के बाद उसके शव को गंगा नदी में पत्थर बांधकर डाल दिया था।

आरोपित राजाबाबू की निशानदेही पर गुरुवार को दोपहर मनीष के शव को पुलिस ने गंगा नदी से बरामद किया व फरार अन्य चारों आरोपितों की तलाश में जुटी है। मनीष का शव बरामद होने के बाद स्वजनों और ग्रामीणों में काफी आक्रोश है। वे पुलिस से फरार चल रहे आरोपितों की अविलंब गिरफ्तारी और कड़ी सजा दिलाने की मांग कर रहे थे।

मा0 मंत्री ने मेला क्षेत्र का भ्रमण कर तैयारियों का लिया जायजा

माघ मेले की तैयारियों का जायजा लेते व हनुमानजी की आरती करते मा0 मंत्री

सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को समय से कार्य पूर्ण करने के दिए निर्देश

प्रयागराज। मा0 मंत्री जल शक्ति (सिंचाई एवं जल संसाधन, बाढ़ नियंत्रण, लघु सिंचाई, नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग) डॉ0 महेन्द्र सिंह गुरूवार को माघ मेला क्षेत्र का भ्रमण कर तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को शीघ्रता से कार्य कराते हुए तैयारियों को समय से पूर्ण कराने के निर्देश दिये। उन्होंने माघ मेले में कोविड-19 के प्रोटोकॉल के अनुपालन हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि मेले में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जायेगा, कहा कि जान है तो जहान है। उन्होंने मेले को सकुशल ढंग से सम्पन्न कराने के लिए सभी आवश्यक व्यस्थायें एवं कार्यवाही समय से सुनिश्चित करने के लिए कहा है। मा0 मंत्री ने मेला क्षेत्र में पाण्टुन पुलों के निर्माण कार्य, विद्युत, पानी, सड़कों पर चकर्ड प्लेट बिछाने सहित अन्य कार्यों को समय से पूरा करने के लिए कहा है। उन्होंने घाटों के बनाये जाने के कार्य को शीघ्रता से पूर्ण कराने के लिए कहा है। उन्होंने श्रद्धालुओं की सुरक्षा की दृष्टि से पानी में बैरीकेटिंग कराये जाने के लिए कहा है, जिससे की कोई भी गहरे पानी में न जाये। मेले की तैयारियों के बारे में जानकारी देते हुए जिलाधिकारी श्री भानु चन्द्र गोस्वामी ने बताया कि मेले के कार्य को समय से पूर्ण कराने के लिए 24 घण्टे कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 31 दिसम्बर तक मेला क्षेत्र में प्रकाश की व्यवस्था सुनिश्चित करा ली जायेगी। इसके साथ ही साथ सभी विभागों के कार्य को समय से पूर्ण करा लिया जायेगा। इससे पूर्व मा0 मंत्री जी ने बड़े हनुमान जी का दर्शन-पूजन करते हुए माघ मेला के सकुशल सम्पन्न होने की कामना की। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष-श्रीमती रेखा सिंह, गंगापार के भाजपा जिलाध्यक्ष श्री अश्विनी दूबे, काशी क्षेत्र के मीडिया प्रभारी-श्री मृत्युंजय तिवारी, एडीएम सिटी-श्री अशोक कुमार कनौजिया, सिटी मजिस्टेज्ट, प्रभारी मेलाधिकारी सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मानवता का प्रतिमूर्ति प्रभु येशु का जन्म : फा. लियो सिक्वेरा

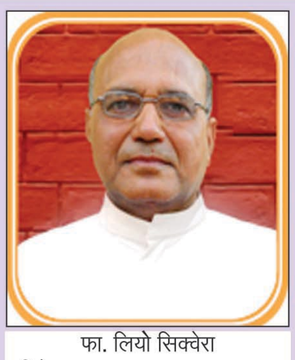

फा. लियो सिक्वेरा
निदेशक, साधना सदन, इलाहाबाद

प्रयागराज। दो हजार वर्ष पूर्व प्रभु येसु का जन्म फलस्तीन में एक साधारण परिवार में हुआ था। नाजरेथ नामक एक छोटी सी बस्ती में उन्होंने अपना जीवन बिताया। उनकी माता मरियम और संरक्षक पिता युसुफ के साथ वे रहे और बढ़े। मरियम श्रद्धालु थी। युसुफ विनीत और साधु स्वभाव का था। नाजरेथ के स्वच्छ वातावरण में इस छोटे से परिवार में येसु मसीह ईश्वर और मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ते जा रहे थे। नाजरेथ में ज्यों ज्यों वे बढ़ रहे थे। उस समय फलस्तीन देश की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति के प्रति वे जागृत और संवेदनशील रहे।

उस समय फलस्तीन में रोमी शासन था। राजा हेरोद स्थानीय राजा था। पुरोहित, फरीसी एवं शास्त्री धर्म गुरू थे। एक ओर रोमी शासन ने राजसत्ता की अन्यायपूर्ण व्यवस्था और बल प्रयोग से लोगों को दबाये रखा था। दूसरी ओर धर्मगुरू और नेताओं के द्वारा साधारण जनता का शोषण हो रहा था और अपने ही बड़प्पन तथा स्वार्थ केलिए धर्म का प्रयोग कर रहे थे। धर्म पाखंड कर्मकांड तथा बाहरी आडम्बर से भरा था। धर्म केवल व्यवस्था और नियमों की पोथी बन गया था। मानवता की कमी थी। फलस्तीन समाज एक विघटित समाज था-ऊंच-नीच, बड़ा-छोटा, शुद्ध-अशुद्ध- विभाजित समाज था। इस विघटित समाज में आम जनता गरीबी एवं बीमारी से पीड़ित थी। उन्हें अपदूतग्रस्त, अशुद्ध एवं पापी माना जाता था। वे थके-मांदे और बोझ से दबे हुए थे। जनता बेहद परेशान थी, बेसहारा थी। समाज में उनका कोई स्थान नहीं था, कोई गरिमा नहीं थी। ऐसी दशा में वे एक मुक्तिदाता की प्रतिक्षा में थे। हां, उन्हें एक मुक्तिदाता मिला - कैसा मुक्तिदाता? मानवता का प्रतिमूर्ति प्रभु येसु मसीह ।

प्रभु येसु मसीह का जन्म राजमहल में नहीं, एक पशुशाला में हुआ। महानगर में नहीं एक अनजान गांव बेथलेहेम में हुआ। घोड़ा नहीं, गदा उनका जानवर रहा। राजगद्दी में विराजने केलिए नहीं, क्रूस पर प्राण देने आया। उनके पास न सोना, न सेना, न पद, न सत्ता थी केवल प्रेम, सत्य और क्षमा बल था। उनके अंदर मानवता कूट-कूट कर भरी हुई थी।

प्रभु येसु मसीह का जन्म मानवता कासंदेश लेकर आता हैं। प्रभु येसु ने अपने शिक्षा एवं उपदेशों में इंसान को केन्द्र में रखा । प्रेम और क्षमा को धर्म का सार माना। उन्होंने मानवीय रिश्तों पर बल दिया। उन्होंने मानव गरिमा एवं सामुहिक हित केलिए निरन्तर संघर्ष किया। उन्होंने असत्य, अन्याय एवं बुराई से कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने हर एक में बिना किसी भेदभाव, जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र, भाषाद्धइंसान को देखा और इंसान को इंसान से जोड़ा।प्रभु येसु की नजर में हर इंसान मूल्यावान और महत्वपूर्ण है, अनोखा एवं सुंदर है। हर इंसान ईश्वर का प्रतिरूप है। प्रभु येसु का सम्पूर्ण जीवन करूणा से भरा हुआ था। वे एक संवेदनशील व्यक्ति थे। जब भी प्रभु ने पीड़ित व्यक्ति को देखा, उनका दिल द्रवित हुआ, करूणा उमड़ पड़ी। जब उनका मित्र लाजरूस मर गया, येसु रो पड़े। उनकी करूणा की चरम सीमा हम क्रूस पर देखते हैं जब उन्होंने कहा, ''हे पिता! उन्हें क्षमा कर दे, वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।''

आज हमारे चारों तरफ घृणा, कटुता एवं हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जहां हिंसा हैं, वहां मानवता नहीं है। हर हिंसक कार्य में हम मानव की जगह दानव को देखते हैं। हिंसा के कई कारण होते हैं, जैसे जाति, धर्म, लिंग, सत्ता इत्यादि । जहां इंसान दूसरों को इंसान व अपना भाई या बहन नहीं समझता वहां मानवता खत्म होती है।

हमारे देश में धर्मों की कमी नहीं, मानवता की कमी है। हर क्षेत्र में विकास तो बहुत हुआ हैं लेकिन मानवता में गिरावट आ रही है। यदि हममें मानवता न हो, पतन निश्चित है। बालक येसु का जन्म लोगों को इस पतन के गर्त से मानवता प्राप्त करने केलिए प्रेरित करता है, जो वर्तमान परिवेश में बहुत ही प्रासंगिक है। प्रभु येसु अपने जयन्ती के शुभ अवसर पर आप सभी को अपने नन्हें पावन हाथों, आशीर्वाद दे। इस पुण्य अवसर पर हम देश के सभी भाई-बहनो के प्रति सहज-स्नेह, शांति एवं आनन्द की शुभकामनाएं अर्पित करते है।

इंजीनियर प्रणव त्रिपाठी के मनोनयन पर कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

प्रयागराज। मिशन मोदी अगेन पीएम के काशी प्रांत युवा मोर्चा के अध्यक्ष के मनोनयन पर इंजीनियर प्रणव त्रिपाठी का त्रिवेणीपुरम में प्रयाग आगमन पर कार्यकताओं ने भव्यता स्वागत एवं अभिनंदन किया' गगनभेदी नारों के साथ त्रिवेणीपुरम का इलाका गुंजायमान हो उठा । कार्यकताओं ने इस बात को लेकर खुशी की लहर है सभी ने आपस में मिठाई बांटी एवं पुष्पगुच्छ तथा माल्यार्पण द्वारा प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत एवं

इंजीनियर प्रणव त्रिपाठी का स्वागत करते लोग

अभिनंदन किया इस अवसर पर अपनी बात रखते हुए इंजीनियर त्रिपाठी ने सबके साथ सबका विकास एवं आगामी विधानसभा चुनाव के संदर्भ में व्यापक तैयारी का निर्देश दिया उन्होंने कहा कि वर्तमान राजनीति के परिपेक्ष में युवाओं का जोश राज्य को विकास की नई दिशा की ओर ले जा रहा है सारी दुनिया आज भारत की ओर निहार रही है युवा किसी भी राष्ट्र का रीढ़ होता है युवाओं के सामर्थ्य पर ही राष्ट्र चल निकलता है और राजनीति में युवाओं का जो रुझान है वह निश्चित रूप से संपूर्ण राष्ट्र को उत्थान की ओर ले जाएगा और भारत विश्व गुरु के पद पर पुन हासिल होगा इस अवसर पर दिलीप त्रिपाठी क्षेत्र पंचायत सदस्य महेश त्रिपाठी प्रमोद त्रिपाठी पवन त्रिपाठी बृजेश हिमांशु नागेंद्र यादव अमन मिश्रा अभिषेक मिश्र आदि ने माल्यार्पण कर स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर महावीर इंस्टिट्यूट के प्रशासनिक अधिकारी अजय सिंह सहित काफी संख्या में लोगों ने त्रिपाठी को माल्यार्पण कर स्वागत किया।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक
स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

मण्डलायुक्त ने प्रयागराज विकास प्राधिकरण के द्वारा कराये जा रहे कार्यों की प्रगति की समीक्षा

कार्यों को गुणवत्ता एवं पारदर्शिता के साथ तेजी से पूर्ण कराये जाने का दिया निर्देश

प्राधिकरण की हाउसिंग स्कीमों के बारे में व्यापक प्रचार-प्रसार कराये जाने का दिया निर्देश

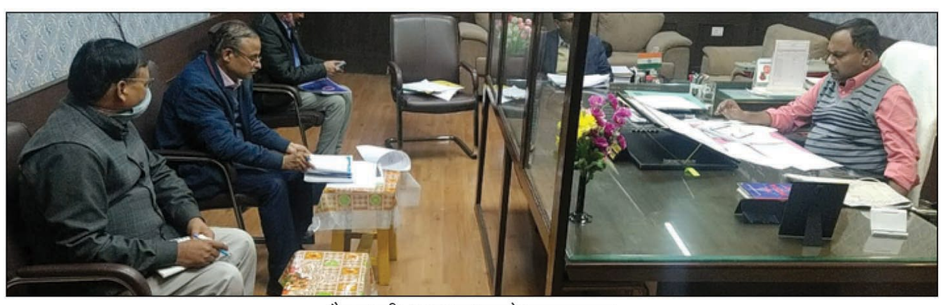

बैठक की अध्यक्षता करते मण्डलायुक्त

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर0 रमेश कुमार की अध्यक्षता में कैम्प कार्यालय में प्रयागराज विकास प्राधिकरण के द्वारा कराये जा रहे कार्यों की प्रगति के सम्बंध में समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी, रेंटल हाउसिंग काम्पलेक्स स्कीम, मल्टी लेवल पार्किंग, सड़क व चैराहों का निर्माण, नगर निगम को हैण्ड ओवर किये जाने वाली कालोनियों, प्राधिकरण की महत्वपूर्ण योजनाओं, शहर के सौन्दर्यीकरण हेतु किये गये कार्यों तथा प्राधिकरण के प्रस्तावित कार्यों में बहुउद्देशीय कल्चरल कॉम्प्लेक्स, न्यू टाउन शिप योजना नैनी, मेट्रो रेल परियोजना, स्मार्ट सिटी योजना के तहत प्रथम फेज के अन्तर्गत कराये गये निर्माण कार्य तथा स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत कराये जा रहे द्वितीय चरण के कार्यों तथा एकमुश्त समाधान योजना, अवशेष सम्पत्तियों के निस्तारण हेतु की गयी कार्यवाही, प्राधिकरण की सम्पत्तियों की जियो टैगिंग के कार्य, अवैध निर्माण के विरूद्ध की गयी कार्यवाही, लैण्ड पूलिंग, प्राधिकरण द्वारा वृक्षारोपण एवं हरित पट्टी के विकास कार्य की प्रगति के साथ-साथ अन्य योजनाओं के बारे में बिंदुवार समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष एवं सचिव को उपलब्ध धन के सापेक्ष निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त के द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के अन्तर्गत कालिंदीपुरम आवास योजना में भवनों के निर्माण कार्य की प्रगति के बारे में पूछे जाने पर प्राधिकरण के सचिव के द्वारा बताया गया कि आवास योजना का सिविल योजना का कार्य पूर्ण हो गया है। विद्युतिकरण एवं जलापूर्ति का कार्य कराया जा रहा है। मण्डलायुक्त ने कार्य को शीघ्रता से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने यह भी निर्देशित करते हुए कहा है कि आवासीय योजना के अन्तर्गत बनाये जा रहे भवनों में से जिनका आवंटन हो गया है और निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है, ऐसे भवनों के कब्जा दिये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित कर ली जाये। मण्डलायुक्त ने आवासीय योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार किये जाने के लिए कहा है, जिससे कि लोगो को आवासीय योजना के बारे में जानकारी हो सके और आवासीय योजना का लाभ उठा सके। मण्डलायुक्त ने स्मार्ट सिटी योजना के अन्तर्गत फेज-2 के तहत कितने कार्यों की स्वीकृति हुई है, कितने योजनाओं पर कार्य शुरू हुआ है, कितने कार्य अनारंम्भ है तथा कितनी लागत के कितने कार्य है, इसके बारे में विस्तृत रिपोर्ट दिये जाने के लिए कहा है। प्राधिकरण की सम्पत्तियों की जिओ टैगिंग कराये जाने के कार्य के बारे में जानकारी लिए जाने पर विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष के द्वारा बताया गया कि जिओ टैगिंग का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। इसी तहर से मण्डलायुक्त ने प्राधिकरण की ऐसी भूमि जिसका अधिग्रहण हो गया है, परंतु कब्जा नहीं प्राप्त हुआ है, उसके बारे में सूचना उलपब्ध कराने के लिए कहा है। प्राधिकरण के द्वारा कराये जा रहे 11 पार्कों के सुदृढीक रण के कार्य की प्रगति के बारे में जानकारी लिए जाने पर प्राधिकरण के सचिव के द्वारा बताया गया कि उपलब्ध धन के सापेक्ष निर्माण कार्य प्रगति पर है। मण्डलायुक्त ने पार्कों के सुदृढ़ीकरण के कार्य में तेजी लाते हुए कार्य को पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री अंकित अग्रवाल एवं सचिव को प्राधिकरण के द्वारा कराये जा रहे कार्यों में गुणवत्ता के साथ तेजी लाये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने यह भी निर्देशित किया है कि जिन कार्यों के निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुके है, उनको शीघ्रता से पूर्ण कराकर हैण्डओवर की कार्यवाही करा ली जाये। उन्होंने प्राधिकरण के द्वारा बनायी जा रही सड़कों के निर्माण कार्य को भी तेजी से पूर्ण कराये जाने के लिए निर्देशित किया है।

क्रियायोग सन्देश

प्रयागराज शुक्रवार, 25 दिसम्बर, 2020

The Occasion of Christmas Day - Great Spiritual Day for Mankind

The aim of each and every person is to experience the state of Christmas Day Consciousness.

Christmas Day means Day of Christmas. Day means clear and complete knowledge. Christmas is made up of 2 words- Christ and mass. Here "Christ" means presence of God in manifested form and "Mass" refers to all creation. All creation visible and invisible is presence of Christ Consciousness.

The Aim of each and every person on this earth is to experience the complete

knowledge that visible and invisible Existence is presence of God (Christ/ Krishna Consciousness). By reading and listening, we cannot experience this Truth We need complete devotion in Kriyayoga Meditation.

In Kriyayoga Meditation, we place our concentration on the region of East which is the source of all knowledge. In our body, East is the location of the head and spine where the chakras (wisdom centers) are. By concentration on each chakra, we awaken the deeper knowledge within ourself. The awakened state of the chakra is known as "star" and brings about the birth of Krishna-Christ (Prophet) Consciousness within.

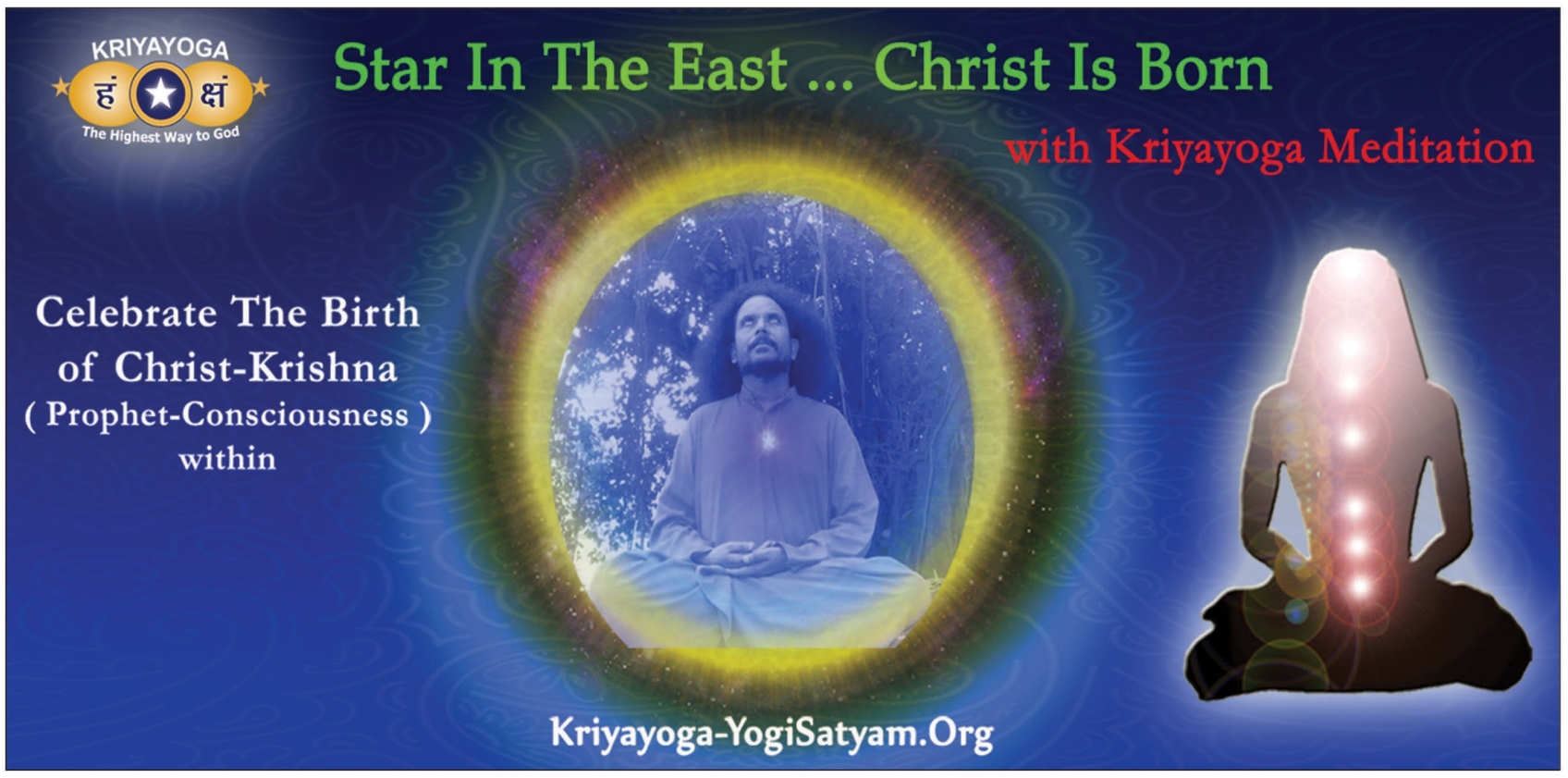

Star in The East...Christ is Born

God is Omnipresent. Present everywhere, in each point in the Cosmos. We can think of God as the black hole where all things are born out of and into which everything goes back. We all are God manifested in each of our forms just as the rest of creation is.

When we seek God, we are on the path of realising Truth. And this truth can be realised by all. Truth can be realised means that Truth can be experienced or perceived. It is not hidden from anyone who wishes to discover it. Truth is simplest in expression and is most easily understood if we have chosen to sincerely discover it. There is no if and buts about truth. There is no second-guessing at what Truth is or means. To realise Truth is the aim of our human form and this is possible only when we seek God.

Again and again we have read in different forms in the scriptures the way to God. Christ has said, "I am the way to God." Krishna has expressed this same truth in different terms in The Gita, saying, "This body is a field and present in it is the knower of the field, who is also the creator of the field." All prophets have spoken of this same truth and through the practice of Kriyayoga, realised this truth. What Christ and Krishna have said simply means that God has manifested in all forms, including our own physical form. To find God, we have to first become an angel.

God or Infinite Omnipresent Spirit, is covered by the delusionary layers of atoms, plants, animals, human beings and angels. Nearest to God are the angels, followed by humans, animals, plants and then atoms and molecules. Therefore, for us to reach God, we have to first become angels. Christ, Krishna, Guru Nanak, Mohammed, Buddha, Mahavir Swami, Lahiri Mahasaya and all prophets of all lands and ages were such angels who demonstrated in their lives that it is possible for us to realise the highest truth in life. All the great masters worked selflessly and unconditionally for humanity and have left behind permanent footprints. Their words we know today to be scriptures and will ever be held in highest regard and considered with deep reverence.

The question now arises. How do we become like the angels that we hold in such high regard? It is by following the path of the masters and leading our lives as they did. What did they do? They practised seeking God each moment. In no matter what they did, they placed closed concentration on the body temple. This practice is known Kriyayoga.

In Kriyayoga practice, we make use of the closest place, our body temple, as a medium to seek God. As we concentrate on the body temple and accept all the changes we feel in it unconditionally with love, we come to realise that all changes we perceive are godly perceptions. As we feel these bodily changes more and more and concentrate on the most important head and spine region, we witness our astral body represented in the form of a white, radiant, five-armed star. The star stands for awakening within us.

The sun, a symbol for awakening, rises in the east. Therefore, the head and spine region is referred to as the east. It is "The East" of the new awakening. What is the new awakening? It is the birth of true knowledge of our Self. This birth of true knowledge within us is termed as the birth of Prophet, Christ or Krishna consciousness. And so we read in The Bible - "Star in the East... Christ is born...".